www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वर्गांक

आज की महती आवश्यकता
"लोक नेतृत्व"

श्रीराम शर्मा आचार्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आज की महती आवश्यकता

"लोक नेतृत्व"

—卐✱卐—

जन समस्याएँ सामान्यतः सदैव एक जैसी ही रही हैं। पेट और प्रजनन का दायरा यदि बढ़ा लिया जाय तो वह इतना भारी भरकम हो जाता है कि उसकी पूर्ति में ही मध्यम श्रेणी के व्यक्ति की क्षमता खप जाय। कई बार तो पुरुषार्थ और आवश्यकता के बीच इतना अन्तर रहता है कि उसकी पूर्ति ही ठीक तरह न बन पड़े और गरीबी की सीमा से नीचे रहना पड़े। कम योग्यता होने और दक्षता हलकी पड़ने पर तो कठिनाई और भी अधिक बढ़ जाती है। बड़ों की देखा देखी ठाठ-बाठ बढ़ा लिया जाय और फिजूल खर्ची की आदत पड़ जाय तो आय-व्यय के बीच संतुलन बिठाना और भी अधिक कठिन पड़ता है। इसके अतिरिक्त भी चिकित्सा, शत्रुता से निपटना आदि के जाल जंजाल ऐसे हैं, जो मनुष्य को हैरान किये रहते हैं। कुछ अपने अनगढ़ चिन्तन और स्वभाव के कारण क्षमताएँ हलकी होने पर भी उन्हें बढ़ा-चढ़ा कर मान लेते हैं और उनके कारण चिन्ता, निराशा, भय, खीज आदि के शिकार होकर व्यक्तित्व को अपंग बना लेते हैं। ऐसी स्थिति में घर गृहस्थी की गाड़ी आगे धकेलना भी कठिन पड़ता है। ऐसे उद्विग्न मनुष्य अपनी निजी समस्याओं में ही उलझे रहते हैं। इसमें भी, कोढ़ में खाज की तरह कहीं महत्वाकांक्षाएँ उबल पड़ें, तो समझना चाहिए कि चिन्ताओं और समस्याओं की अति हो गई।

यह है गरीबी और मध्यम वर्ग का जीवनक्रम। इसमें कोल्हू के बैल की तरह चलने वाला जन समुदाय अपनी निजी सीमा से आगे बढ़कर धर्म, समाज, संस्कृति के संबंध में कुछ उत्थान-समाधान परक योगदान देना तो दूर उस संदर्भ में सोच तक नहीं पाता।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्कर्ष और समाधान के लिए कुछ महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व उठाने पड़ते हैं। उन्हें कुछ ही लोग उठाते रहें तो भी काम नहीं चलता। व्यापक प्रगति के लिए जन साधारण का भी सहयोग चाहिए, अन्यथा अस्तव्यस्ताएँ इतनी बढ़ी-चढ़ी होंगी, कि उनसे निपटना ही कठिन लगेगा। प्रगति पथ में जो बाधाएँ अड़ी हुई हैं उनका निराकरण करते न बन पड़ेगा। इतिहास साक्षी है कि जहाँ भी गतिरोधों में सुधार हुआ है और उत्साहवर्धक प्रगति का द्वार खुला है उसमें जन साधारण का सहयोग न्यूनाधिक मात्रा में अनिवार्य रूप से अवश्य रहा है।

अपने आप में सीमित कूप-मंडूक बने जन समुदाय से यह आशा नहीं की जा सकती, कि वे स्वेच्छा से अपना निज का भार वहन करते हुए सामाजिक, सामूहिक समस्याओं के उपयुक्त समाधान ढूँढ़ सकें और उन्हें स्वेच्छा पूर्वक चला सकें। इसके लिए मार्गदर्शकों की--नियोजन और नियन्त्रण कर्त्ताओं की आवश्यकता पड़ती है। वे न हों, अथवा उनका स्तर घटिया हो, तो गाड़ी का आगे बढ़ सकना कठिन है। समय के परिवर्तन में सूत्र संचालकों की सर्वोपरि आवश्यकता होती है, अन्यथा वे या तो जहाँ के तहाँ खड़े रहेंगे या मनमर्जी अपना कर दुर्घटना खड़ी करेंगे। जन समुदाय को भी इन वाहनों के ही समान समझना चाहिए और उसकी संकीर्णता और व्यस्तता देखते हुए यह आशा नहीं की जा सकती कि सामुदायिक समस्याओं का समाधान एवम् प्रगति का योजना बद्ध प्रयास उनसे बन पड़ेगा। उन्हें ऐसे मार्गदर्शक की आवश्यकता रहेगी जो न केवल अपनी प्रखरता विकसित कर सकें, वरन् सामयिक समस्याओं को समझने और उन्हें परिस्थितियों के अनुरूप सुलझाने में समर्थ हो सकें। उपयुक्त नेतृत्व की हर समय आवश्यकता होती हैं, क्योंकि समय तेजी से बदलता रहता है। पुराने समाधान संभलने से पूर्व ही, नये संकट और विग्रह आ खड़े होते हैं। उनसे सर्वथा छुटकारा पाने की आशा कभी भी नहीं की जा सकती। इसलिए जन नेतृत्व की आवश्यकता भी किसी समय 'पूर्ण हो चली' नहीं समझी जा सकती। समर्थ नेतृत्व का विकसित होते रहना भी ऐसा ही आवश्यक है जैसा कि अन्न वस्त्र जैसी दैनिक आवश्यकताओं को जुटाना।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भावनाशील, आदर्शवादी, परमार्थी, दूरदर्शी प्रकृति के लोगों को इस प्रयोजन के निमित्त आगे आना होता है और इसके लिए उन्हें निजी महत्वाकांक्षाओं को घटाना या हटाना पड़ता है। इसके अतिरिक्त पारीवारिक अर्थ संतुलन इस दूर-दर्शिता के साथ सुलझाना पड़ता है, कि उसकी चिन्ता में व्यस्त रहने या भ्रष्ट आचरण अपनाने की आवश्यकता न पड़े। जन नेतृत्व का यह प्रारम्भिक चरण है। यह पूर्ण रूप से न बन पड़े, तो थोड़ा बहुत समय देते रहने—प्रयत्न करते रहने से भी काम चल सकता है।

प्राचीन काल में साधु और ब्राह्मण के दो समुदाय ऐसे थे जो अपनी समग्र क्षमता लोक मंगल के लिए समर्पित करते थे। उनके ऊंचे व्यक्तित्व और महान् प्रयासों को देखते हुए जनता स्वेच्छा श्रद्धा से प्रेरित होकर दान दक्षिणा के बहाने उन वर्गों की निर्वाह आवश्यकता पूरी कर दिया करती थी। आज वह बात नहीं रही। वे उच्चवर्ग भी जन साधारण की भाँति 'स्व' केन्द्रित हो गये। परमार्थ के नाम पर धार्मिक कर्म काण्डों की चिन्ह पूजा करते रहना भर उनका व्यवसाय रह गया है। फलस्वरूप लोक श्रद्धा भी समाप्त हो गई। परम्पराओं की दुहाई देकर या छल-बल का आश्रय लेकर गुजारा चलाना पड़ता है। यह सब इसलिए हुआ कि लोक नेतृत्व के लिए जिस प्रकार का उच्चस्तरीय व्यक्तित्व अभीष्ट है, उसकी आवश्यकता अनुभव नहीं की जा रही, फलतः उसका प्रभाव भी ऐसा नहीं रह गया, जिसके कारण जनता उनके मार्गदर्शन को हृदयंगम और कार्यान्वित कर सके। लोक नेतृत्व की अब विडम्बना ही चल रही है और रंगमंच के नट नायकों की तरह प्रहसन जैसी उसकी लकीर पिट रही है। फिर उनके पास जो चिन्तन शैली और समाधान पद्धति है, वह इतनी पुरानी हो गई कि उसे पुरातत्व संग्रहालय में कथा-कौतूहल के लिए ही सुरक्षित रखा जा सकता है। समय इतना बदल गया है, कि वस्तु स्थिति को समझने और समाधान खोजे बिना और कोई मार्ग नहीं। हमें समय के साथ चलना ही होगा।

पुराने समय में वेष के आधार पर साधु को और वंश के आधार पर ब्राह्मण को मान्यता मिल जाति थी। पर अब वैसी बात नहीं रही। दूध का जला

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

छाछ को फूंक कर पीता है। अब वेश और वंश प्रामाणिकता के चिह्न नहीं रहे। अब व्यक्ति का ज्ञान, चरित्र और व्यवहार तीनों ही परखे जाते हैं। इन कसौटियों पर खरे उतरने वाले ही लोक मानस में अपना स्थान बना सकते हैं और उनकी श्रद्धा इस स्तर तक उठा सकते हैं कि वे परामर्शों का अनुगमन कर सकें। नेतृत्व के लिए इस विशिष्टता का होना अनिवार्य रूप से आवश्यक हो गया है। सामान्य लोगों में भी इतनी बुद्धिमत्ता विकसित हो गई है कि वे इतने भर से सन्तुष्ट न हों कि क्या कहा गया? वरन यह भी परखें कि किसने कहा?

गांधी, विनोबा आदि के कथनों और मार्ग दर्शनों को लाखों ने सच्चे मन से अपनाया और उसके हेतु बढ़ चढ़कर त्याग बलिदान भी किया। प्रायः इन्हीं बातों को बाजारू नेता भी दुहराते हैं। लच्छेदार भाषा के कला कौशल पर तालियां तो बज जाती हैं, पर सुनने वालों में से कदाचित ही ऐसे निकलते हों जो उस कथन के अनुरूप अपना जीवन क्रम बदल सकें। इससे स्पष्ट है कि शब्द अब सशक्त नहीं रहे। वे अब शब्द वेध नहीं करते। इसका कारण एक ही है, कि कथन के साथ चरित्र जुड़ा हुआ नहीं होता। उसके निष्पक्ष होने में भी संदेह रहता है। राजनैतिक दलों की तरह साम्प्रदायिक पक्ष में अपने-अपने मतों के प्रति दुराग्रह दिखाते हैं और जन विवेक जागृत करने की अपेक्षा अपने प्रतिपादन को प्रतिष्ठा का विषय बनाकर तर्कों का ढेर लगाते और भावनाओं को जिस-तिस प्रकार भड़काते हैं। इस स्तर का आवेश कुछ ही समय में समाप्त हो जाता है और जिससे कहा गया था वह अपने पुराने ढर्रे को अपनाए रहने में ही खैर समझते हैं।

राजनैतिक और धार्मिक प्रवक्ताओं की ही भरमार है और वे दलगत प्रतिपादनों की ही तोता रटन्त करते हैं। उनका वास्तविक समस्याओं की ओर ध्यान नहीं जाता और न उन्हें सँभालने सुधारने की आवश्यकता ही समझी जाती है। फलतः जड़ सींचने से विमुख रहकर पत्ते धोने जैसी विडम्बना चलती रहती है।

आज की अत्यन्त कठिन और प्रभावी समस्याएं तीन हैं। एक चिन्तन को मानवी गौरव के अनुरूप परिष्कृत करना। दूसरा व्यक्तिगत चरित्र में ईमानदारी, जिम्मेदारी और समझदारी की मात्रा का विकास करना। तीसरा समाज-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गत प्रचलनों में जो भ्रष्टाचार घुस पड़ा है उसके विरूद्ध विद्रोह खड़ा करना। अभी हम पिछली पीढ़ी के पुण्य प्रताप से राजनैतिक क्रान्ति कर सकने में समर्थ हुए हैं। सुशासन मिलना अभी बाकी है। अधिनायक वाद में तो यह शासन द्वारा भी किसी सीमा तक सम्पन्न हो सकता है। किन्तु प्रजातन्त्र में लोक मानस बदलने और व्यक्तियों को आदर्श के निमित्त उछाले बिना और कोई उपाय नहीं। प्रजातन्त्र में जैसी जनता होती है उसी स्तर की सरकार बनती है। भ्रष्टाचार ऐसा रोग है जो ऊपर से नीचे की ओर ही नहीं नीचे से ऊपर की ओर भी चलता है और छूत की बीमारी की तरह एक दूसरे को लगता भी है।

गरीबी दूर करने का नारा अथवा आश्वासन बड़ा आकर्षक लगता है। पर वह वर्तमान प्रचलनों के रहते किसी भी प्रकार सम्भव नहीं। खाद पानी की व्यवस्था करके खेत की उपज बढ़ाई जा सकती है. किन्तु खर्चीली शादियों, मृतकभोजों, ठाट-बाट के अपव्ययों में वह उत्पादम फूटे पैन्दे वाले घड़े की तरह जमीन पर फैल जायगा और बार-बार भरते रहने पर भी वह समेटा न जा सकेगा। कुरीतियाँ, मूढ़-मान्यताएँ इतनी मंहगी हैं कि उनके रहते हम आर्थिक उत्कर्ष के मात्र दिवा स्वप्न ही देख सकते हैं।

इसी प्रकार घटिया स्वार्थी चोर और अपराधी व्यक्तित्व, परस्पर अविश्वास और विग्रह की आग में ही सदा जलते रहेंगे। न एक दूसरे का ख्याल करेंगे और न सहयोग की व्यवस्था पनपने देंगे। उनके द्वारा उत्पन्न किये गये संकटों से निपटने के लिए पुलिस, कचहरी, जेल आदि से सम्बन्धित अनेक आवश्यक खर्च बढ़ेंगे और मनोमालिन्य की खाई गहरी करेंगे। चेचक पर मरहम चुपड़ने से नहीं, रक्तशोधक उपचार करने से काम चलता है। सड़ी नाली को साफ करने से ही मक्खी, मच्छरों और दुर्गन्धित कृमि-कीटकों से छुटकारा पाया जा सकता है। वस्तुतः आज की हमारी आवश्यकता नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्रान्ति की है। उसके बिना आर्थिक क्रान्ति के प्रयास भ्रष्टाचारियों की जेब भर भारी करते रहेंगे। यही बात शासन के सम्बन्ध में भी है। उसे स्वच्छ बनाने के लिए मतदाताओं की ऐसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विवेक बुद्धि जगानी होगी, जो चयन करते समय किसी दबाव, प्रलोभन या भट-काव से बचकर दूरगामी परिणामों का सही अनुमान लगा सकें ।

दुर्भाग्य की बात है कि यह वास्तविक सुधार हमारी दृष्टि से ओझल है और तात्कालिक लाभों को ध्यान में रखते हुए लोग राजनेता बनने की प्रतिद्वन्दता में फंसते हैं । या भावुक लोगों का शोषण करने के लिए धर्माडम्बर ओढ़कर लच्छेदार वक्ता का कौशल अपनाकर, व्यवसाय आगे धकेलते हैं ।

यह कहने में तनिक भी अत्युक्ति नहीं कि नेता बनने की प्रति द्वन्द्विता इतनी बढ़ गई है कि रेल में जगह न मिलने पर लोग उसकी छत पर जा बैठने का जोखिम तक उठाते हैं । भारी भीड़ में कितने ही कुचल कर मर भी जाते हैं । लगभग यही धकापेल नेतृत्व के क्षेत्र में चल रही है । महत्वाकांक्षी लोग अपना चेहरा चमकाने और चर्चा का विषय बनने में यश भी देखते हैं और प्रकारान्तर से उसकी आड़ में सम्मान और वैभव बटोरते हैं । व्यक्तिगत जीवन में खोखले व्यक्ति अधिक दिन तक परख की पकड़ से नहीं बच सकते हैं और पानी के बबूले की तरह बैठकर उसी स्थिति में जा पहुँचते हैं, जिसके वे वस्तुतः अधिकारी थे । जनता एवम् साथियों को कृतघ्न ठहराने पर भी उफान का झाग नीचे बैठ जाने की तरह टिकता नहीं ।

लोक नेतृत्व की आज इतनी अधिक आवश्यकता है, जितनी पहले कभी नहीं रही । क्योंकि बहुमुखी समस्याओं और विपन्नताओं ने सारे समाज को अपने शिकंजे में कसलिया है और उत्कर्ष के लिए किये गये प्रयत्न निरर्थक सिद्ध हो रहे हैं । कहने को इसका दोषी जनता को, उसमें घुसी दुष्प्रवृत्तियों को ठहराया जा सकता है । शासक को, या विश्व व्यवस्था को भी दोषी कहा जा सकता है । पर यह सब आत्मप्रवंचना भर है । असली कारण व्यक्तित्व का घटिया होना और दुष्प्रवृतियों को पकड़कर बैठ जाना है । असल में उन्हीं का उपचार समस्त समस्याओं का एक मात्र हल हो सकता है । इसके लिए प्रयत्न होने चाहिए । क्या प्रयत्न हों ? इसके लिए लोक नायकों की संख्या ही नहीं, स्तर भी इतना ऊँचा उठाया जाना चाहिए, कि लोक मानस उसका अनुगमन करता चला जाय । ऐसा चुम्बकत्व, चिंतन, चरित्र और व्यवहार में उत्कृष्टता भरे बिना किसी प्रकार सम्भव नहीं । सफल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नेतृत्व वही कर सकता है जो गुण, कर्म, स्वभाव की कसौटी पर खरा उतरे। वह अकेला भी बहुत कुछ कर सकता है, जबकि षडयन्त्रकारियों के गिरोह भी कुछ समय बाद परस्पर सिर फोड़ते देखे गये हैं।

प्रचार साधनों का अपना महत्व हो सकता है। लेखनी और वाणी के प्रभाव से उत्तेजना उत्पन्न की जा सकती है और यह सरंजाम, साधन एकत्रित करके सरलता पूर्वक गैस भरे गुब्बारे की तरह आसमान में उड़ाया जा सकता है। ऐसे प्रचार कौतुक, सभा-सम्मेलनों, फिल्मों, विज्ञापनों आदि के द्वारा भी हो सकते हैं। पर वे क्षणिक होते हैं और उनके द्वारा उत्पन्न किया गया बुखार, खोखले आन्दोलनों की तरह उतर जाता है।

नेतृत्व एक ऐसा तत्व है जिसे खरे, सोने की तरह हर खरीददार द्वारा परखा जाता है। नेता ऊंचे मंच पर ही नहीं बैठता, वरन् परोक्ष रूप से उसे इतना प्रामाणिक बनना पड़ता है, जो न केवल सार्वजनिक क्षेत्र में, आर्थिक क्षेत्र में हर कसौटी पर खरा साबित हो, वरन् व्यक्तिगत चरित्र की दृष्टि से भी वह ऐसा हो, जिसे संदेहों से ऊपर उठा हुआ समझा जा सके। यहाँ एक बात स्मरणीय है कि इस क्षेत्र में छल, कपट या दुराव अधिक समय नहीं टिक सकता। उसे हवा सूंघती है और चारों ओर सुगन्ध दुर्गन्ध की तरह बिखेरती रहती है।

जन नेतृत्व की उच्चस्तरीय भूमिका विचारशील, चरित्रवान और प्रगतिशील लोग ही निभा सकते हैं। इस अभाव की पूर्ति न हो सकी तो समझना चाहिए कि व्यक्ति का, विश्व का भविष्य अन्धकारमय ही बना रहेगा। जिनकी स्थिति इसके लिए उपयुक्त है उन्हें समय की मांग पूरी करने के लिए आगे आना चाहिए। भले ही निजी जीवन में कितनी ही कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े।

क्रमाङ्क–२५४। युगान्तर चेतना प्रेस–शान्ति कुञ्ज, हरिद्वार। मूल्य ४० पैसा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org